भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

वर्ष-18 अंक-5 | वि. स. 2079 | युगाब्द 5124 | जुलाई-2022 | डिजिटल संस्करण

मार्गदर्शक :
- डॉ कृष्णगोपाल
  संस्थापक न्यासी
- श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई जी'
  संस्थापक न्यासी
- श्री ओमप्रकाश गोयल
  अध्यक्ष
- श्री राहुल सिंह
  सचिव/प्रबंध न्यासी

सम्पादक :
- डॉ शिवभूषण त्रिपाठी

सह-सम्पादक :
- राजेश

मुद्रक एवं प्रकाशक :
- जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रबंधक :
- विजय अग्रवाल

केन्द्रीय कार्यालय :
भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निराला नगर,
लखनऊ, उ.प्र.-226020
दूरभाष: 0522-4001837,
0522-2789406
मो: 9450020514
E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in
web : www.bhaoraonyas.org

दिल्ली कार्यालय :
E-mail: bdsnyas.dl@gmail.com
मो : 9811068375

आलोकः प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संरक्षक सहयोग राशि : रु 5000/-

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/-

जन्म- 17 अगस्त, 1955 पुण्यतिथि -05 जुलाई 2007

अधीश जी

अध्ययनशील परिश्रमी, मिलनसार छविमान।
राष्ट्रभक्त वक्ता प्रखर, ओजस्वी मतिमान।।
तन-मन निर्मल राष्ट्रहित, करते थे तुम काम।
अमर तुम्हारी कीर्ति को, श्रद्धा सहित प्रणाम।।

-शिव

सेवा संवाद के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य

आपकी पत्रिका सेवा संवाद अब डिजिटल रूप में प्रकाशित करने का निर्णय न्यास द्वारा किया गया है। आप सभी से अनुरोध है कि डिजिटल संस्करण आपको नियमित मिलता रहे, उसके लिए अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी जल्द से जल्द न्यास के ई-मेल आईडी –bdsnyas.dl@gmail.com पर प्रेषित करें।

पाठकों की कलम से - इस कॉलम के लिए पत्रिका के विषय में या भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रकल्पों से सम्बंधित आपके अनुभव व सुझाव आमंत्रित हैं। अपना नाम, पता और मोबाइल भी जरूर दें।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सहकार निवेदन

पिछले 29 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों का व्याप बढ़ाने के लिए न्यास के आय स्त्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी इस कार्य में प्रयुक्त होती है। अतः लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. सचल चिकित्सा सेवा – रु. 11,000 की मासिक धनराशि का सहयोग करके एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. नेत्र चिकित्सा सेवा – रु. 5000 की धनराशि का सहयोग कर एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर उसे नेत्र ज्योति प्रदान कराना।
3. विकलांग सहायता सेवा – रु. 1,000 से 6,000 तक की राशि दे कर एक विकलांग बन्धु की सहायता में उसके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, बैसाखी, ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. कार्पस फण्ड (स्थायी निधि)- रु. 10,000 से अधिक की धनराशि का अर्पण करके न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. छात्रवृत्ति- न्यास द्वारा जरूरतमंद छात्रों को वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जिसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। कक्षा के अनुसार छात्रवृत्ति इस प्रकार है – प्राथमिक : रु 3000, माध्यमिक (जू.हा.) : रु 5,000, हाईस्कूल : रु 7,000, इण्टरमीडिएट : रु 8000, आई.टी.आई/डिप्लोमा एवं स्नातक : रु 10,000, परास्नातक : रु 12,000, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु : रु 15,000, इंजीनियरिंग : रु 18,000 और मेडिकल : रु 20,000।
6. सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक पत्रिका) – रु. 2,000 की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. सेवा संवाद (मासिक) – रू. 2,000 की आजीवन एवं रु. 5,000 की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. माधव सेवा आश्रम – रु. 5,00,000 का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।
9. विश्राम सदन दिल्ली – दिल्ली में एम्स के निकट न्यास द्वारा संचालित विश्राम सदन में प्रति बेड के लिए वार्षिक रु. 21,000 की कमी रहती है जिसके लिए सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक बेड के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
10. देवभूमि ऋषिकेश में प्रस्तावित **माधव सेवा विश्राम सदन** के भवन निर्माण हेतू अधिकाधिक सहयोग अपेक्षित है।
11. अक्षय सेवा – दिल्ली में एम्स एवं दो अन्य अस्पतालों के निकट दोपहर में होने वाले भोजन वितरण के लिए रु. 6,000 (प्रतिदिन/प्रति अस्पताल) की सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक दिनों के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
12. CSR फंड – यदि आपकी फर्म CSR में भी दान करती है तो कृपया न्यास से फोन या ईमेल द्वारा सम्पर्क करें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। प्रत्येक दानदाता को अपना पता व पैन बताना अनिवार्य है। साथ ही आपसे अनुरोध है कि आप एक पत्र भी भेजें कि आप यह राशि न्यास को दान के रूप में दे रहे हैं। समाज के सेवा-कार्यों हेतु अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दानराशि भेजने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं :

- चेक व ड्राफ्ट द्वारा जो, **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में **लखनऊ या दिल्ली** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेजें।
- अप्रवासी भारतीय भी FCRA के अन्तर्गत दान दे सकते हैं। उसके लिए फोन या मेल द्वारा सम्पर्क करें।
- दान की राशि आप सीधे न्यास के खाते में भी जमा कर पैन नं., फोन नं. व पते के साथ सूचित कर सकते हैं।
  - बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ – खाता सं. 6806100009948 (IFSC : BKID0006806)
  - भारतीय स्टेट बैंक, डालीगंज, लखनऊ – खाता सं. 30448433657 (IFSC : SBIN0003813)
  - भारतीय स्टेट बैंक, सफदरजंग एंक्लेव, नई दिल्ली – खाता सं. 41171580896 (IFSC : SBIN0013182)

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

अपनी बात

सेवा व्यक्ति की हो या समाज की, देश की अथवा राष्ट्र की, सेवा तो सर्वतोभावेन सर्वत्र कल्याणकारी होती है। माता-पिता की सेवा के लिए तो कहना ही क्या है? पुत्र के लिए माता-पिता की सेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। पुत्र यदि माता-पिता की सेवा छोड़कर तीर्थ या देवताओं की सेवा करें तो उसका फल नहीं मिलता। पद्मपुराण के एक ऐतिहासिक उद्धरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है। कथा कुछ इस प्रकार है कि एक ब्राह्मण थे। वे माता-पिता की सेवा छोड़कर तीर्थाटन करने लगे। विधि विधान से उनकी यात्रा, खान-पान नियन्त्रित, उनके अच्छे कर्म तथा पुण्य के प्रभाव से उनके कपड़े आकाश में सूखा करते थे। एक दिन उन्हें कुछ अहंकार हो गया। वे अपनी प्रशंसा करने लगे, इसी बीच जंगल में पेड़ पर बैठे बगुले ने उनके मुख पर बीट कर दी। नरोत्तम को क्रोध आया और उन्होंने बगुले को शाप दे दिया। बेचारे बगुले की मृत्यु हो गई। इस घटना को देखकर उनमें मोह तथा अहंकार का संचार हुआ। वे समझने लगे कि मैं जिसे चाहूंगा भस्म कर दूंगा। पर उनका यह सोचना गलत था। उन्हें एक आकाशवाणी सुनाई पड़ी - "हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तुम परम धर्मात्मा मूक चाण्डाल के पास जाओ। वहीं जाने से तुम्हें अपने कर्तव्य का बोध होगा।" एक दिन पूछते हुए नरोत्तम मूक चाण्डाल के पास पहुँचकर देखते हैं कि उस मूक चांडाल का घर बिना किसी आधार के आकाश में स्थित है और घर में एक ब्राह्मण भी बैठा हुआ था। चाण्डाल अपने माता पिता की सेवा में तल्लीन था। यह सब देखकर भी नरोत्तम ने चाण्डाल से कहा - तुम मेरे पास आओ और मुझे मेरे हित की बात बताओ। चाण्डाल ने बड़ी विनम्रता से उनका स्वागत किया और कहा आप मेरे अतिथि हैं, मैं आपकी सेवा अवश्य करूंगा, किन्तु थोड़ी देर प्रतीक्षा करें क्योंकि मैं माता-पिता की सेवा में लगा हूँ और यह मेरे लिए अतिथि सेवा से बढ़कर कर्तव्य है।" मूक चाण्डाल की बात सुनकर नरोत्तम को क्रोध हो आया। उसने कहा - 'मुझ ब्राह्मण से बढ़कर तुम्हारे लिए और कौन सेवा हो सकती है, यदि तुम मेरी उपेक्षा करोगे तो मैं शाप दे दूंगा'। नरोत्तम ब्राह्मण की बात सुनकर महात्मा मूक ने बड़ी विनम्रता से कहा- "महाराज मैं बगुला नहीं हूँ कि आप के शाप से भस्म हो जाऊंगा। अब आपकी धोती आकाश में नहीं सूखा करती। आप आकाशवाणी सुनकर मेरे घर आए हैं, थोड़ी देर ठहरें। मैं आपकी सेवा अवश्य करूँगा। यदि बहुत जल्दी हो तो पतिव्रता शुभा के पास जायें, वह आपको समझा देगी। वहाँ भी कुछ ऐसा ही हुआ और उसने तुलाधार के पास भेजा। तुलाधार सबको एक समान समझता था। उसके पास बहुत से लोग पहले से ही लाइन में थे उसने भी प्रतीक्षा करने की बात कही और धर्माकर (अद्रोहक) के पास भेजा। वहाँ उन्हें ज्ञान हुआ कि जो अपने माता-पिता की निरन्तर सेवा नहीं करते उनकी सारी तपस्या नष्ट हो जाती है। ब्रह्मा भी माता-पिता के क्रोध के आगे कुछ सहायता नहीं कर सकते। काश! लोगों को समय से समझ आ पाती कि पुत्र के लिए माता-पिता की सेवा में ही स्वर्ग है, आनन्द है। पितृवत् सकल समाज को समझकर सब की सेवा की जाय तो किसी के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं; सभी सुखी और सम्पन्न होंगे। अधीश जी ने जीवन में राष्ट्र एवं समाज की सेवा को महत्व दिया। आज वे हमारे लिए अनुकरणीय आदर्श हैं। हम भी सेवा कार्य में लगें इन्हीं सद्भावनाओं के साथ यह अंक आपको समर्पित है।

-शिव

अक्षय सेवा प्रकल्प

प्रभु की लीला और आपका आशीर्वाद

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा 5 वर्ष पूर्व प्रारम्भ किया गया प्रकल्प आज इन्द्रदेव की परीक्षा में भी सफल रहा और भोजन वितरण का कार्य सुचारू रूप से संपन्न हुआ। इस सब के पीछे आप जैसे कई महानुभावों का प्रयास और भावनात्मक लगाव हमें शक्ति प्रदान करता है। आज के वितरण में एक स्थान पर प्रसिद्ध समाजसेवी, उद्योगपति और जिंदल कोटेक्स से श्री रमेश जिंदल जी अपनी पत्नी श्रीमती रेणु जिंदल जी के साथ भयंकर वर्षा में भी छाता लेकर भोजन वितरण में उपस्थित रहे और अपने हाथों से वितरण किया। प्रसिद्ध CA श्री राजेश बोहरा जी की पत्नी श्रीमती संगीता बोहरा जी अस्पताल में अपना उपचार करा रही हैं पर उन्होंने भी अपनी ओर से एक स्थान पर भोजन वितरण कराया।

श्री रमेश जिंदल जी, श्रीमती रेणु जिंदल जी, श्री राजेश बोहरा जी और श्रीमती संगीता बोहरा जी जैसे लोग ही हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं। इस प्रकल्प के प्रति इनके लगाव के कारण हमें इस प्रकल्प को और अधिक तीव्रता से और अनेक स्थानों पर प्रारम्भ करने की प्रेरणा और साहस मिलता है। अतः न्यास और प्रकल्प के सभी कार्यकर्ताओं की ओर से आप चारों का हार्दिक धन्यवाद।

अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा एक नया प्रकल्प अयोध्या में प्रारम्भ किया गया। इस प्रकल्प, अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, का उद्घाटन पूजा पाठ के साथ 24 जून को किया गया जिसमें लखनऊ के डायबिटीज, थायराइड एवं हार्मोन सुपर स्पेशलिस्ट एवं इस नए प्रकल्प के सचिव डॉ सुशील उपाध्याय, स्वयंसेवी संस्था, व्यापारीगण व डॉक्टरों की टीम मौके पर मौजूद रही। डॉ सुशील ने बताया कि स्व. अशोक सिंघल जी ने श्री राम जन्मभूमि के लिए बहुत संघर्ष और त्याग किया था। आज उन्हीं के नाम से अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान का उद्घाटन गरीबों की सेवा करने के मुख्य उद्देश्य से किया गया है।

उद्घाटन के अवसर पर 50 गरीब और जरूरतमंद लोगों का निशुल्क रजिस्ट्रेशन करके नेत्र जांच और चश्मे का वितरण किया गया। उन्होंने बताया कि आने वाले समय में हमारी संस्था द्वारा साल में 2 लाख चश्मों का निशुल्क वितरण किया जाएगा। संस्थान के साथ स्वयंसेवी संस्था, कुछ वरिष्ठ व्यापारीगण और डॉक्टरों की टीम है जिनके सहयोग से इस संस्था द्वारा जरूरतमंद लोगों के लिए निशुल्क नेत्र जांच, दवा और चश्मे का वितरण किया जाएगा। संस्थान की योजना से एक मिनी बस जिसमें सारी मशीनें और चिकित्सक टीम उपलब्ध रहेगी गांव गांव जाकर गरीब और जरूरतमंद लोगों का निशुल्क नेत्र जांच और चश्मे की व्यवस्था की जाएगी। आने वाले समय में जैसे मोतियाबिंद और बड़े ऑपरेशन के लिए हमारे यहां ऑपरेशन की भी सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि राम जन्मभूमि अयोध्या धर्म नगरी में सेवा करने का अवसर मिल रहा है जिससे लोगों को नेत्र ज्योति मिले और वे दिव्य दर्शन कर सकें।

उद्घाटन कार्यक्रम में महंत स्वामी मिथिलेश नंदनी शरण, प्रमुख-हनुमंत सदन, डॉ सुशील उपाध्याय (सचिव), राजेश जी, डॉक्टर विनीता सिंह एचओडी नेत्र विभाग केजीएमसी (संस्थान की संयोजिका), डॉ अरुण शर्मा (नेत्र विशेषज्ञ), अयोध्या एसएसपी श्री शैलेश पांडे, राम जन्मभूमि न्यास के न्यासी श्री अनिल मिश्रा, बाबरी मस्जिद के पूर्व पक्षकार श्री इक़बाल अंसारी, श्री अश्वनी तिवारी सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

महामना शिक्षण संस्थान

दिनांक 10 जून को ईश्वर की विशेष कृपा स्वरूप महामना शिक्षण संस्थान के परिसर में एक मंदिर निर्माण हेतु भूमि पूजन किया गया। यजमान के रूप में श्री सत्य प्रकाश मिश्र जी, श्री सुरेंद्र मिश्र जी और श्री देवेश राय जी सपत्नीक उपस्थित रहकर भूमि पूजन का कार्यक्रम संपन्न कराया। कार्यक्रम में श्री यतींद्र नाथ शर्मा जी सह संगठन मंत्री विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की उपस्थिति मुख्य अतिथि के रूप में रही । मुख्य अतिथि जी ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में कहा - "एक बार श्रद्धेय भाऊराव देवरस जी वनवासी क्षेत्र गुमला बिहार में गए थे तो वहां के वनवासी लोगों ने कहा कि उन लोगों के पास बहुत बड़े-बड़े नेता आते हैं और भाषण देकर बिना कुछ लाभ दिए चले जाते हैं। उन्होंने आग्रह किया कि भाऊराव जी उनके बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था प्रदान करें। उसी समय श्रद्धेय भाऊराव देवरस जी ने एकल विद्यालयों और संस्कार केंद्रों के माध्यम से आर्थिक रूप से पिछड़े बच्चों के लिए निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की। उन्हीं के नाम से स्थापित सेवा न्यास के माध्यम से महामना शिक्षण संस्थान भी समाज में एक उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। शिक्षा के साथ-साथ यहाँ के छात्र आध्यात्मिक दृष्टि से विकसित हों इसके लिए मंदिर निर्माण किया जाना अत्यंत ही सराहनीय कार्य है। यह सभी के लिए लाभकारी हो मेरी यही कामना है।" विशिष्ट अतिथि के रूप में कथा वाचक श्री सुधीरानंद जी महाराज मंच पर विराजमान रहे। उन्होंने छात्रों और दर्शक अतिथियों को आध्यात्मिक विकास हेतु प्रेरित किया। प्रदीप कुमार मिश्र, कुलपति एकेटीयू ने अपने उद्बोधन में कहा कि मंदिर निर्माण, ज्ञान और आध्यात्मिक विकास में मील का पत्थर बनेगा। उक्त अवसर पर महामना शिक्षण संस्थान के सभी पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे। संस्थान के छात्रावास संचालक श्रीमान कैलाश चंद्र मिश्र द्वारा सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया गया। अंत में प्रसाद वितरण के पश्चात कार्यक्रम समाप्त हुआ।

महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प

प्रगति समीक्षा

प्रगति पथ पर निरंतर अग्रसर महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प की कोर कमेटी द्वारा पिछले दिनों एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया, जिसके अंतर्गत वर्तमान शैक्षिक सत्र में प्रवेश लेने वाली बालिकाओं के लिए माल एवेन्यू, लखनऊ स्थित न्यास के स्वामित्व वाले एक फ्लैट में अस्थाई छात्रावास की व्यवस्था कर नि:शुल्क कोचिंग सुविधा देते हुए उनकी पढ़ाई में सहयोग देना सुनिश्चित किया गया है।

प्रारंभ से ही संस्थान पढ़ाई के साथ साथ बालिकाओं के समग्र विकास के लिए प्रयत्नशील रहता है, जिसके अंतर्गत माह में दो बार भिन्न विषयों को लेते हुए व्यक्तित्व विकास - PD (Personality Development) से सम्बंधित सत्र आयोजित किए जाते हैं। व्यक्तित्व विकास की इसी श्रृंखला में जून माह में आयोजित सत्रों के विषय 'Cashless Society' और 'योग' पर आधारित रहे। बालिकाओं ने योग पर आधारित सत्र के दौरान 'आधुनिक जीवन में योग की उपयोगिता' पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस प्रकार संस्थान विभिन्न विषयों के प्रति सजगता बरतते हुए छात्राओं को भी अद्यतन (up-to-date) बने रहने में मदद करता है।

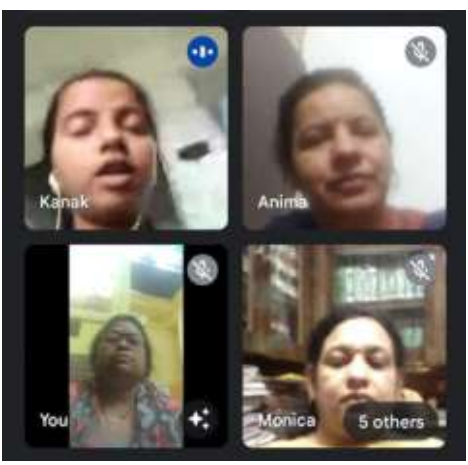

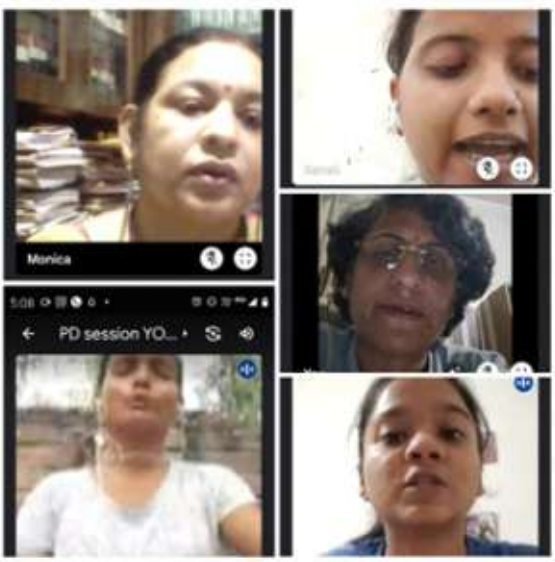

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के तत्वावधान में प्रकल्प में अध्ययनरत बालिकाओं ने स्वयं योगाभ्यास करते हुए अपने वीडियो प्रेषित किए।

माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश

भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ द्वारा देश में भिन्न भिन्न स्थानों पर प्रमुख अस्पतालों के निकट रोगियों और उनके सहायकों के लिए विश्राम सदन चलाए जा रहे हैं। ये स्थान हैं लखनऊ में SGPGI के निकट, लखनऊ में ही KGMU के निकट, दिल्ली में एम्स के निकट, झज्जर हरियाणा में एम्स के निकट और पटना में IGIMS के निकट जिनमें कुल 2000 के लगभग लोगों के ठहरने की व्यवस्था है।

इसी प्रकार की व्यवस्था ऋषिकेश एम्स के निकट उपलब्ध कराने के लिए न्यास ने एम्स के निकट ही माधव सेवा विश्राम सदन स्थापित करने की योजना की है। माधव सेवा विश्राम सदन ऋषिकेश के भूमि पूजन का एक भव्य कार्यक्रम देवभूमि ऋषिकेश में 12-13 जून को संपन्न हुआ जिसमें 2000 से अधिक लोगों ने भाग लिया। दिल्ली, लखनऊ और अन्य शहरों से लगभग 250 लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। इसके अतिरिक्त लगभग 2000 स्थानीय जनों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया।

10 जून को पत्रकार वार्ता में न्यास के संस्थापक न्यासी और इस प्रकल्प के प्रमुख श्री संजय गर्ग जी ने पत्रकारों को इस पूरे प्रकल्प के बारे में विस्तार से जानकारी दी जिसे अनेक समाचार पत्रों ने अगले दिन प्रमुखता से स्थान दिया।

12 जून को प्रातः संत विजय कौशल जी महाराज और अन्य प्रबुद्धजनों के सानिध्य में और काशी से आये पुजारी डॉ मनोज मणि त्रिपाठी जी द्वारा विधि विधान पूर्वक भूमि पूजन और शिलान्यास का कार्य संपन्न किया गया। मुख्य यजमान की भूमिका में न्यास के संस्थापक न्यासी और कोषाध्यक्ष श्री रामअवतार किला

जी अपनी सहधर्मिणी श्रीमती सुशीला किला जी के साथ उपस्थित रहे। तत्पश्चात संत विजय कौशल जी महाराज ने ओजस्वी शब्दों के साथ न्यास की जानकारी दी और इस भवन की आवश्यकता के बारे में अवगत कराया। उन्होंने समाज के समर्थ लोगों से इस पुनीत कार्य में आर्थिक सहयोग देने काआह्वान किया।

12 जून को सायं में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति हुई जिसमें विशेष रूप से श्रीमती ब्रह्मा देवी सरस्वती बालिका मंदिर हापुड़, सरस्वती बाल मंदिर हापुड़ और आनंद स्वरुप आर्य सरस्वती विद्या मंदिर देहली रोड, रूड़की से आये बालकों और बालिकाओं ने मनमोहक नृत्य और नाटिका प्रस्तुत की। इस कार्यक्रम का विषय था, गंगा, पहाड़ और पलायन। इसकी पश्चात कार्यक्रम स्थल के निकट ही स्थित गंगेश्वर घाट पर

विशेष रूप से गंगा आरती का आयोजन हुआ। न्यास के सभी कार्यकर्ताओं ने पहले गंगा पूजन में भाग लिया और उसके बाद सभी ने हृदय स्पर्शी भजनों का आनंद लिया। रात्रि में भव्य गंगा आरती हुई। सभी ने बहुत उत्साह से इसमें भाग लिया और आशा से अधिक संख्या रही। पूरा वातावरण ही गंगामयी हो गया था।

13 जून को प्रातः काल अनेक प्रबुद्ध जनों की उपस्थिति में पूर्व मा. सर कार्यवाह श्री भैय्या जी जोशी के हाथों शिलान्यास का कार्य पूर्ण किया गया। हवन का आयोजन भी इसी समय किया गया जिसमें श्री किला जी सपत्नीक उपस्थित रहे।

पूजन के पश्चात मंचीय कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। श्री पुष्कर सिंह धामी जी और स्वामी रामदेव जी ने समाज से आग्रह किया कि उन्हें इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग बढ़-चढ़ कर करना चाहिए। बीच बीच में न्यास के सचिव श्री राहुल सिंह जी ने माधव सेवा विश्राम सदन के निर्माण हेतु आर्थिक सहयोग करने वाले दानदाताओं का परिचय कराया और कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओं ने गंगोत्री से विशेष रूप से मंगाए गए गंगा जल देकर उनका सम्मान किया। साथ ही अनेक व्यक्तियों की जानकारी भी दी गई जिन्होंने अपनी ओर से राशि देने का संकल्प लिया। अंत में मा. भैय्या जी जोशी जी ने सारगर्भित व्याख्यान दिया और समाज का आह्वाहन किया।

कार्यक्रम में संघ के प्रान्त प्रचारक श्री युद्धबीर जी, प्रान्त कार्यवाह श्री दिनेश सेमवाल जी, सह प्रान्त कार्यवाह श्री अनिल मित्तल जी, मा. जिला संघचालक श्री सुदामा सिंघल जी और अनेक स्थानीय कार्यकर्ता उपस्थित रहे। न्यास के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी गोयल, न्यासी श्री सूर्यकांत जालान जी, न्यासी और सांसद डॉ अनिल जैन जी, न्यासी श्री रंजीव तिवारी जी, अनेक दानदाता, स्थानीय विधायक और वित्त मंत्री श्री प्रेम चन्द्र अग्रवाल, श्री नन्द किशोर गर्ग जी, श्री सुधीर मोहन मित्तल जी, श्री महेश बाबू गुप्ता जी, श्री हरमेश चौहान जी आदि अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे। समाज के अनेक बंधुओं ने दिन-रात मेहनत की और इस कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम के अंत में न्यासी श्री संजय गर्ग जी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

विभिन्न चैनलों द्वारा इस कार्यक्रम के विषय में समाचार दिखाए गए। अगले दिन सभी प्रमुख समाचार पत्रों में इस कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी प्रमुखता से व सचित्र प्रकाशित की गई।

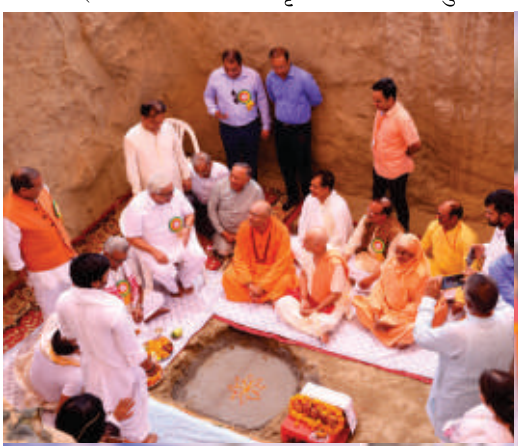

शिलान्यास कार्यक्रम के कुछ दृश्य

आपका सहकार

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूजनीय माधव राव जी गोलवलकर की स्मृति में देवभूमि ऋषिकेश में एम्स अस्पताल के निकट माधव सेवा विश्राम सदन की स्थापना प्रस्तावित है। इस सदन का उपयोग साधु संतों, एम्स ऋषिकेश में उपचार के लिए आने वाले रोगियों व उनके सहायकों द्वारा किया जाएगा। यह कार्य आपका अपना ही है, इसे अनुभव करते हुए आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप उदार हृदय से इस सेवा प्रकल्प हेतु यथा संभव सहयोग करें। आपके द्वारा दी गई राशि 80-G के अंतर्गत छूट प्राप्त है। आप CSR फंड के अंतर्गत भी सहयोग कर सकते हैं। आपका यही सहयोग निर्मित होने वाले इस विश्राम सदन के शीघ्रातिशीघ्र साकार रूप लेने में सहायक होगा।

आपके परिवार में सुख-समृद्धि के लिए शुभकामनाएं।

आर्थिक सहयोग के लिए आवश्यक जानकारी :

MCA में न्यास की CSR पंजीकरण संख्या CSR00004454
80G में न्यास की पंजीकरण संख्या AAATB1049GF20217
न्यास की FCRA पंजीकरण संख्या 136550134

भारतीय स्टेट बैंक, केंद्रीय सचिवालय, नई दिल्ली

A/C: 40692412361
IFSC : SBIN0000625

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस - 21 जून

दिल्ली के एम्स विश्राम सदन में

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस - 21 जून को दिल्ली के एम्स विश्राम सदन में योग दिवस मनाया गया जिसमें सदन में रह रहे रोगियों, उनके परिचारकों और सदन के कर्मचारियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। भाग लेने वालों में महिलायें भी थीं।

पावन स्मृति - जुलाई

पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा की और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्य समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया,अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं ऐसे उन सभी दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित हैं।

दिनांक	दिवस	महापुरूष/घटना का नाम
4 जुलाई	स्थापना-दिवस	आजाद हिन्द फौज की स्थापना
5 जुलाई	पुण्य-तिथि	हँसकर मृत्यु को अपनाने वाले- अधीश जी
6 जुलाई	जन्म-दिवस	नारी जागरण की अग्रदूतः लक्ष्मीबाई केलकर
7 जुलाई	जन्म-तिथि	मानवता के हमदर्दः गुरू हरिकिशन जी
8 जुलाई	इतिहास-स्मृति	टाइगर हिल की जीत
13 जुलाई	बलिदान-दिवस	बाजीप्रभु देशपाण्डे का बलिदान
20 जुलाई	पुण्य-तिथि	एक विस्मृत विप्लवीः बटुकेश्वर दत्त
29 जुलाई	पुण्य-तिथि	सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूतः ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
31 जुलाई	बलिदान-दिवस	जलियाँवाला के प्रतिशोधीः ऊधम सिंह

अधीश जी

(17 अगस्त 1955 - 5 जुलाई 2007)

आगरा के एक अध्यापक जगदीश भटनागर तथा उषा देवी के घर में जन्म हुआ। बालपन से ही उन्हें पढ़ने और भाषण देने का शौक था। वर्ष 1968 में प्राचार्य लज्जाराम तोमर ने उन्हें स्वयंसेवक बनाया। धीरे-धीरे संघ के प्रति प्रेम बढ़ता गया और बीएससी, एलएलबी करने के बाद 1973 में वे संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्ता बने। वर्ष 1975 में आपातकाल लगने पर वे जेल गये और भीषण अत्याचार सहे। आपातकाल के बाद मेरठ महानगर, सहारनपुर जिला, विभाग, मेरठ प्रान्त बौद्धिक प्रमुख, प्रचार प्रमुख आदि दायित्वों के बाद उन्हें वर्ष 1996 में लखनऊ भेजकर उत्तर प्रदेश के प्रचार प्रमुख का काम दिया गया। प्रचार प्रमुख के नाते लखनऊ के 'विश्व संवाद केन्द्र' के काम में नये आयाम जोड़े। अत्यधिक परिश्रमी, मिलनसार और वक्तृत्व कला के धनी अधीश जी से जो भी एक बार मिलता, वह उनका होकर रह जाता। उन्हें अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख और फिर प्रचार प्रमुख का काम दिया गया और पूरे देश में उनका प्रवास होने लगा। अधीश जी अपने शरीर के प्रति प्रायः उदासीन रहते थे जिस कारण से वे कैंसर जैसी घटक बीमारी से ग्रस्त हो गए।

अंग्रेजी, पंचगव्य और योग चिकित्सा जैसे उपायों का सहारा लिया गया, पर रोग बढ़ता ही गया। चिकित्सकों ने साफ कह दिया कि अब दो-तीन महीने से अधिक का जीवन शेष नहीं है। अधीश जी ने इसे हंसकर सुना और स्वीकार कर लिया। एक विरक्त योगी की भांति अपने मन को शरीर से अलग कर लिया। अब उन्हें जो कष्ट होता, वे कहते यह शरीर को है, मुझे नहीं। कोई पूछता कैसा दर्द है, तो कहते, बहुत मजे का है। इस प्रकार वे हंसते-हंसते हर दिन मृत्यु की ओर बढ़ते रहे। चार जुलाई, 2007 को वे बेहोश हो गये। उनका कष्ट देखकर पांच जुलाई शाम को माता जी ने उनके सिर पर हाथ रखकर कहा – बेटा अधीश, निश्चिन्त होकर जाओ। जल्दी आना और बाकी बचा संघ का काम करना। इसके कुछ देर बाद ही अधीश जी ने देह त्याग दी।

वेदों के मर्मज्ञ : डा० फतह सिंह

(13 जुलाई 1913 - 6 फ़रवरी 2008)

वेदों के गहन अध्येता डॉ फतह सिंह का जन्म पीलीभीत उत्तर प्रदेश में हुआ था। 1942 में उन्हें डी.लिट् की उपाधि मिली। उसके बाद वे ऋषि दयानन्द के अभिमत की प्रामाणिकता सिद्ध करने में लग गए। इस पर उन्होंने सैकड़ों लेख लिखे, जो तत्कालीन प्रतिष्ठित शोध पत्रों में प्रकाशित हुए। उनके शोध पत्रों एवं लेखों पर उस समय के महान विद्वानों डॉ गोपीनाथ कविराज, विधुशेखर भट्टाचार्य और डॉ गंगानाथ झा आदि ने प्रशंसात्मक टिप्पणियाँ कीं।

उन्होंने वेदों पर हिन्दी एवं अंग्रेजी में सैकड़ों लेख व दर्जनों पुस्तकें लिखीं। इनमें मानवता को वेदों की देन, भावी वेदभाष्य के सन्दर्भ सूत्र, दयानन्द एवं उनका वेदभाष्य, पुरुष सूक्त की व्याख्या, ढाई अक्षर वेद के... आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय सौंदर्यशास्त्र की भूमिका, साहित्य और राष्ट्रीय स्व, दिशाबोध, आभास और सत् जैसी अनेक साहित्यिक कृतियों का भी उन्होंने सृजन किया।

डा० फतह सिंह ने प्राचीन सिन्धु लिपि अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि सिन्धु मुद्राओं की लिपि पूर्व ब्राह्मी और भाषा वैदिक संस्कृत है। सिन्धु लिपि पर उनके काम से प्रभावित होकर राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने उन्हें वर्तमान युग का ऋषि और आधुनिक पाणिनी की संज्ञा दी। 30 वर्ष तक अनेक विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में अध्यापक रहे डॉ फतह सिंह को उनके शोध कार्यों पर सैकड़ों पुरस्कार एवं सम्मान दिये गये। 6 फ़रवरी को इस मनीषी का देहान्त हुआ।

शंकराचार्य : श्री जयेन्द्र सरस्वती

(18 जुलाई 1935 - 28 फ़रवरी 2018)

श्री जयेन्द्र सरस्वती का बचपन का नाम सुब्रह्मण्यम था। उनका जन्म तमिलनाडु के इरुलनीकी कस्बे में श्री महादेव अय्यर के घर में हुआ था। पिताजी ने उन्हें नौ वर्ष की अवस्था में वेदों के अध्ययन के लिए काञ्ची कामकोटि मठ में भेज दिया। वहाँ उन्होंने छह वर्ष तक ऋग्वेद व अन्य ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया और अनेक तीर्थों की यात्रा की। वे भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन के लिए तिरुमला गये और वहाँ उन्होंने सिर मुण्डवा लिया। 22 मार्च, 1954 उनके जीवन का महत्वपूर्ण दिन था, जब उन्होंने संन्यास ग्रहण किया।

इसके बाद 15 वर्ष तक उन्होंने वेद, व्याकरण मीमांसा तथा न्यायशास्त्र का गहन अध्ययन किया। उनकी प्रखर साधना देखकर काञ्ची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य स्वामी चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित कर उनका नाम जयेन्द्र सरस्वती रखा। अब उनका अधिकांश समय पूजा - पाठ में बीतने लगा; पर देश और धर्म की अवस्था देखकर कभी - कभी उनका मन बहुत बेचैन हो उठता था। उन्होंने पूजा-पाठ एवं कर्मकाण्ड के काम अपने उत्तराधिकारी को सौंप कर स्वयं निर्धन हिन्दू बस्तियों में जाकर सेवा कार्य प्रारम्भ करवाये। उन्हें लगता था कि इस माध्यम से ही निर्धन, अशिक्षित एवं वञ्चित हिन्दुओं का मन जीता जा सकता है। उन्होंने मठ के पैसे एवं भक्तों के सहयोग से सैकड़ों विद्यालय एवं चिकित्सालय आदि खुलवाये। इससे तमिलनाडु में हिन्दू जाग्रत एवं संगठित होने लगे। तत्पश्चात खराब स्वास्थ्य और वृद्धावस्था के कारण स्वामी जयेन्द्र सरस्वती ने समाज की सेवा करते हुए 28 फ़रवरी 2018 जीवन लीला समाप्त की।

विश्राम सदनों में जून-2022 में आने वाले नए रोगी व सहायक

क्र.स.	राज्य/देश	माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	KGMU, लखनऊ	विश्राम सदन, दिल्ली	IGIMS, पटना	एम्स, झज्जर	योग
1	जम्मू कश्मीर			5		1	6
2	हिमाचल प्रदेश			5			5
3	पंजाब		1	6		1	8
4	हरियाणा			18		174	192
5	दिल्ली	8		9	2	49	68
6	उत्तराखंड	1	4	14		16	35
7	उत्तर प्रदेश	1776	713	181	4	185	2859
8	बिहार	1001	39	260	2102	30	3432
9	झारखण्ड	93	3	26	38	12	172
10	सिक्किम						
11	नागालैंड						
12	असम			4	5		9
13	मणिपुर /मिजोरम						
14	अरुणाचल प्रदेश						
15	त्रिपुरा			3			3
16	मेघालय						
17	प. बंगाल	20		21	6	4	51
18	ओडिशा/अंदमान	4		1	1	1	7
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना			2			2
20	तमिलनाडु /पुदुच्चेरी						
21	कर्नाटक					1	1
22	केरल						
23	महाराष्ट्र /गोवा	9	2	3			14
24	मध्य प्रदेश	83		55		15	153
25	छत्तीसगढ़	7					7
26	गुजरात	2		6	2		10
27	राजस्थान			16	0	14	30
28	अन्य						2
	पड़ोसी देश						
29	नेपाल	17	8	12	8		45
30	बांग्लादेश		1			3	4
31	अन्य देश						
	योग (इस मास)	**3028**	**771**	**647**	**2168**	**506**	**7120**
	योग (अप्रैल 22 - मार्च 23)	**9013**	**2341**	**1914**	**5479**	**1570**	**20317**
	एक दिन की औसत उपस्थिति	**354**	**139**	**255**	**243**	**152**	**1143**

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प - लखनऊ

लखनऊ और उसके आस पास दी जाने वाली चिकित्सा सेवाओं का विवरण

सेवा बस्ती में स्वास्थ्य केंद्र	जून	अप्रैल 22 से
वेदांत आश्रम पपनामऊ चिनहट	13	27
सेवा समर्पण संस्थान, बिन्दौवा	112	346
51 शक्तिपीठ, बक्शी का तालाब	80	117
अम्बेडकर नगर	19	59
माधव सेवा आश्रम	15	15
माधवराव देवड़े स्मृति रूग्ण सेवा केंद्र		
एलोपेथिक	377	1084
होम्योपैथिक	285	826
रूग्ण सेवा केंद्र, माधव सेवा आश्रम	217	639
कुल लाभान्वित रोगी	1119	3114

देवड़े नेत्र चिकित्सालय

चिकित्सालय में दी गई सेवाएँ

	जून	योग (अप्रैल - जून)
नेत्र परीक्षण	727	2280
चश्मा वितरण	379	1226
मोतियाबिंद ऑपरेशन	3	73
Fundus Test	0	48
OCT Test	0	6
पैथोलॉजी	254	512

आलोक : नेत्र एवं पैथोलॉजी जांच केवल 20 रूपए के पंजीकरण शुल्क में उपलब्ध है।

आप भी लिखें :- सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख (चित्र सहित), सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा संस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं सुझाव आदि सामग्री तथा सेवा संवाद के प्रकाशित अंकों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित कर हमारा मार्गदर्शन, सहयोग करने का कष्ट करें- सम्पादक।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रकल्प

प्रकल्प का नाम	संपर्क सूत्र	दूरभाष
स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प, लखनऊ	श्री ओ. पी. श्रीवास्तव	9839785395
माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	श्री शरद जैन	9670077777
महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ	श्री रंजीव तिवारी	9731525522
महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ	श्रीमती सीमा अग्रवाल	9335922353
सामाजिक विज्ञानं एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
विश्राम सदन, के.जी.एम.यू. , लखनऊ	श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल	9415003111
देवडे नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ	श्री राजेश	9793120738
सेवा संवाद (मासिक), लखनऊ	डॉ शिवभूषण त्रिपाठी	9451176775
सेवा चेतना (अर्धवार्षिक), लखनऊ	डॉ विजय कर्ण	8887671004
विश्राम सदन, एम्स , दिल्ली	श्री राजीव गुगलानी	9810262200
अक्षय सेवा, दिल्ली	श्री रामअवतार किला	9811052464
समर्थ भारत, दिल्ली	श्री शोनाल गुप्ता	9811190016
भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र, दिल्ली	श्री गौरव गर्ग	9918532007
विश्राम सदन, आई. जी. आई. एम. एस., पटना	श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह	9431114457
विश्राम सदन, एम्स, झज्जर (हरियाणा)	श्री विकास कपूर	9818098600
माधव सेवा विश्राम सदन , ऋषिकेश	श्री संजय गर्ग	9837042952
अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या	डॉ सुशील उपाध्याय	9554966006

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस सेवा न्यास सी-91, निराला नगर, लखनऊ-226020 के लिए नूतन ऑफसेट मुद्रण केंद्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226002 से मुद्रित, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सी-91, निराला नगर, लखनऊ-262020 से प्रकाशित - सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी